India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

गुरुदेव के उत्तराधिकारी की नियुक्ति

कोलकाता, ३ अक्तूबर २०११

गुरुदेव कार्य समिति के सदस्यों एवं कुछ आमंत्रितगण को सम्बोधित करते हुए

जैसा कि मैंने कहा, आज मैं अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करना चाहता हूँ – नामान्कित और नियुक्त–क्योंकि मेरा पिचासीवा साल चल रहा है और अब समय आ गया है, जैसा कि आप सब भी मान्य करेंगे। यह बाबूजी महाराज के आशीर्वाद से किया जा रहा है और मुझे आदेश दिया गया है कि इस नियुक्ति को सिर्फ लिखित में ही नहीं – एक गुप्त दस्तावेज के तौर पर, उचित समय पर प्रयोग करने के लिए रखा जाए – बल्कि इसके अतिरिक्त इसको जनता के सामने घोषित भी किया जाये ताकि लोगों को इस व्यक्ति के आस–पास होने की आदत सी हो जाये और वे इस बात को धीरे धीरे आत्मसात कर लें कि यही उत्तराधिकारी है और वक्त आने पर यह आकस्मिक परिवर्तन न महसूस हो, जो मेरी समझ में सही है। पर मेरे पास पहले से ही लिखित दस्तावेज़ मौजूद है और अंतत: मैं ये निवेदन करूंगा की कोई इसे पढ़कर सुनाए।

जिस व्यक्ति के कन्धों पर इन जिम्मेदारियों के दायित्व का भार पड़ेगा उसे बहुत विवेक, बहुत धीरज, बहुत प्यार की जरूरत पड़ेगी, और सबसे ज्यादा कुछ करने से पहले बहुत चिंतन करने की जरूरत होगी। आम तौर पर कहा जाता है कि "कुछ करने से पहले अच्छी तरह से सोच लो" या "कोई भी काम करने के पहले दो बार सोचो", लेकिन सहज मार्ग में दो नहीं बल्कि कई कई बार सोचकर, अत्यधिक चौकस रहकर, सबसे ज्यादा, क्या कहे, इस तथ्य की चेतना बनी रहे कि जब हम पैसा खर्च करते हैं, हम जनता के पैसे को खर्च कर रहे हैं जोकि जन–कल्याण के लिए हमारे पास सौंपा गया है। अगर नामान्कित व्यक्ति के पास यह सब गुण नहीं हैं, तो उसे ये सब विकसित करने होंगे। अंदर से दृढ़ता और बाहर से मित्रता और भाईचारा। और बाबूजी के दिए हुए नीतिवचन का अनुकरण करे, जिसका मैंने आजीवन पालन किया है – किसी पर विश्वास मत करो और किसी पर अविश्वास भी मत करो। काम करने के लिए चुने गए लोगों को केवल उनके कार्यों के आधार पर आँको। सिर्फ उनके कार्यों के परिणामों के आधार पर उन्हें नियुक्त करो या काम से मुक्त करो। किसी तरह का कोई पूर्वाग्रह नही, पूर्वाग्रह न कुल का, न गोत्र का, न धर्म का, न लिंग का, न बिरादरी का, न भाषा का, किसी का नहीं।

अत: जो इस भार को उठायेगा उसे यह बात एकदम ठीक से समझ लेनी चाहिए। गुरुदेव उनको लंबी आयु दें और अच्छा स्वास्थ्य एवं शक्ति दें, जिसकी उन्हें बहुत जरूरत पड़ेगी। क्योंकी जब मैंने मिशन को विरासत में पाया था तो यह काफ़ी छोटा था, जो व्यक्ति मेरे पश्चात् उत्तराधिकारी बनेगा तब मिशन काफ़ी बड़ा होगा संभालने के लिए, एक सार्वभौमिक मिशन। यह अब भी तेजी से बढ़ रहा है और बढ़ता रहेगा, अगर बाबूजी के संदेशो को प्रत्यक्ष रूप से लिया जाए। यह एक प्रगतिशील चरण है। मुझे पता नहीं कब तक जारी रहेगा। यह दैवी योजना पर निर्भर करता है।

अत: जिस व्यक्ति को मैं अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर रहा हूँ वो हैं– श्री कमलेश पटेल।

... अब मैं विश्वभर के अभ्यासियों से अनुरोध करता हूँ कि वह नियुक्त किए गए उत्तराधिकारी को, बिना पूर्वाग्रह के, अपना पूर्ण सहयोग दें। उन्हें उनके कार्यों के आधार पर परखें, न कि उनके अतीत के आधार पर या जो आशा आप उनसे रखते हैं, बल्कि वह जो हैं, जो वो होंगे, जो वो करेंगे। यह मिशन के स्वास्थ्य के लिए सबसे जरूरी है, और इसका यही मतलब है कि जो सेवा वो आप सबकी इस मिशन के द्वारा करेंगे, उन्हें आपका पूर्ण, हार्दिक सहयोग मिले, और इसके लिये मैं आपसे अनुरोध करता हूँ।

आप सबका कल्याण हो।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

मालिक की यात्रा

दिल्ली १६ से १८ अगस्त २०११

मालिक १६ अगस्त को वायु मार्ग से शाम ५:३० बजे चेन्नई से दिल्ली पहुँचे। हवाई अड्डे पर लगभग १०० अभ्यासी बड़ी प्रसन्नता और गर्मजोशी के साथ उन्हें लेने आये हुए थे। मालिक प्रसन्न दिख रहे थे और जब उनसे पूछा कि उनकी यात्रा कैसी रही, उन्होंने हँसते हुए कहा, "संस्कारों की तरह, यात्रा के कष्ट भी सहने पड़ते हैं"। थोडी ही दूरी पर मालिक एक अभ्यासी भाई के घर पहुँचे और सभी उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग करवाया। पूरी शाम वे प्रसन्न थे। रात्रि भोज के बाद जब मालिक को समाचार मिला कि बाबूजी महाराज की पोती ने एक पुत्री को जन्म दिया है तो उन्होंने कहा कि चेन्नई से दिल्ली आते समय उन्हें ऐसा लगा और अपने प्रिय मालिक की पड़पोती का नाम 'देवयानी' रखने का सोचा है।

अगले दिन मालिक ने सुबह का सत्संग करवाया और दिन में आश्रम की संपत्ति के प्रथम चरण के पंजीकरण हेतु निकल गये। पंजीकरण के बाद वहां उपस्थित सभी से प्यार से बातचीत की और प्रसाद बाँटा। शाम को लगभग ६:३० बजे उन्होंने सत्संग कराया। रात्री भोज के बाद, मालिक ने अपने चुटकुलों से सब को बहुत हँसाया और टी.टी.के. समूह में कार्य करते समय के किस्से सुनाये। बातचीत के बीच उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा, "प्यार की तरह ईमानदारी भी एकाकी मार्ग है और ईमानदारी का पुरुस्कार ईमानदार बने रहना ही है।"

१८ अगस्त को, मालिक ने कुछ अभ्यासियों से बात की और बाद में दोपहर में हैदराबाद के लिये रवाना हुए।

हैदराबाद १८ से २३ अगस्त

हैदराबाद पहुँच कर मालिक 'कान्हा शांन्ति वनम' परियोजना के पंजीकरण हेतु गच्चिबॉवलि जाने के लिये रवाना हुवे। वहाँ वे भाई श्रीनिवासन राव काशामपुरकर से मिलकर प्रसन्न हुए जो उनसे उम्र में चार वर्ष बड़े हैं और जिन्हें मालिक ने प्रशिक्षक बनने के बाद उनकी सबसे पहली पूजा करवाई थी। उनके साथ मालिक की बातचीत बहुत ही सुकोमल थी। रात्रि भोज के बाद बच्चे भोजन के टेबल पर इकट्ठे हो गये और उन्होंने अपने मालिक दादा को चुटकुले सुनाये और मालिक ने भी जवाब में कुछ चुटकुले सुनाये।

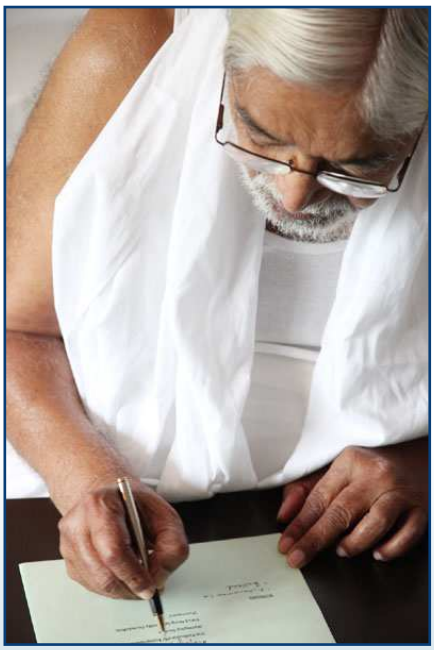

१९ अगस्त को सुबह के सत्संग के बाद मालिक 'कान्हा' परियोजना के सदस्यों से मिले और दस्तावेजों की समीक्षा की। नाश्ते के बाद उपस्थित लोगों से उन्होंने बातचीत की और एक बहन से पूछताछ करते हुए पूछा कि कल वो कहां थीं, तब बहन ने जवाब दिया कि कल उनकी मनोदशा ठीक नहीं थी। मालिक ने उनसे पूछा कि "क्या वह उनसे नाराज़ हैं" और कहा कि बाबूजी ने उनसे कहा था कि तुम अपनी पत्नि से, पति से, पुत्र या पुत्रि से नाराज़ नहीं हो सकते पर मालिक से नाराज़ हो सकते हो क्योंकि वही ऐसी नाराज़गी है जिसका कोई अप्रत्यक्ष प्रभाव नहीं होता।

२० अगस्त को नाश्ते के बाद मालिक ने 'कान्हा शान्ति वनम' के लिये प्रस्थान किया। वहां भूमि साफ की गयी है, बाड़ा लगाकर उसे घेरा गया है और पपीता, मक्का और धान बोये गये हैं। एक पेड़ के चारों ओर एक कुटिया बनायी गयी है। मालिक उसके बाहर बैठे और उन्होंने भूमि के रेखाचित्र का निरीक्षण किया। मालिक ने उस स्थल पर पहला सत्संग करवाया और आगे से रविवार का नियमित सत्संग कराने की अनुमति भी दी। वे पूरी जगह घूमे और जिस तरह से इसकी देख़रेख़ की जा रही है, उसकी प्रशंसा की। फिर वे भाई मधु कोथापल्लि के निवास पर भोजन और विश्राम करने लौटे।

मालिक आश्रम पहुँचने के लिये व्याकुल थे और दोपहर ३:३० पर घर छोड कर लगभग शाम ६ बजे ज़ोनल आश्रम पहुँचे जहाँ लगभग ४००० अभ्यासियों ने आनंद पूर्वक उनका स्वागत किया। जब किसी ने अनुशासन पर टिप्पणी की तो मालिक ने मुस्कुराते हुए कहा कि इस स्थर तक आने में उन्हें बहुत ज़्यादा समय लगा। जब वे ढलान चढ़ रहे थे तब बच्चों ने चिल्लाकर उनका अभिवादन किया। मालिक ने पलट कर उनसे कहा याद रखो सहज मार्ग हमें शान्त रहना सिखाता है।

२१ अगस्त को मालिक ने खचाखच भरे हॉल में सुबह और शाम का सत्संग करवाया। शाम को बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम और कथक नृत्य की प्रस्तुती दी।

२२ अगस्त को गुरुदेव ने सुबह ७:३० बजे सत्संग कराया। तत्पश्चात् भजन गाए गए। एक बहन को, जिसने

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

उनसे प्रार्थना करने के सही तरीके के बारे में पूछा, उन्होंने बताया, जिस व्यक्ति के लिए आप प्रार्थना करना चाहते हैं, उसे एक शिशु के समान बाहों में पकडिए और गुरुदेव के सम्मुख उस व्यक्ति को रखिए और बस कहिए, 'इस व्यक्ति का ख्याल रखिए', इस प्रकार हम सहज मार्ग में प्रार्थना करते हैं। सायंकाल के सत्संग के बाद बहन सौम्या द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया।

२३ को गुरुदेव हवाई–अड्डे के लिए रवाना हुए जहाँ एक अभ्यासी ने उनसे पूछा कि क्या केवल ज़मीन के पंजीकरण के लिए उनका यात्रा करना ज़रूरी था जबकि किसी और को इसके लिए प्राधिकृत किया जा सकता था, गुरुदेव ने कहा कि वे आए क्योंकि वे सभी से मिलना चाहते थे।

दिल्ली: २३ से ३० अगस्त, २०११

गुरुदेव २३ की शाम को दिल्ली वापस आए। हवाई–अड्डे पर अभ्यासियों ने उनका हर्षपूर्वक स्वागत किया। वे हमेशा की तरह प्रसन्नचित थे। गुरुदेव की उपस्थिति में दिन जैसे उड़कर चले गए और समय के बीतने का पता ही नहीं चला। जो लोग उनके इर्द–गिर्द थे उन्होंने देखा किस प्रकार गुरुदेव अपने दफ़्तर में अथक काम करते रहे, अभ्यासियों के साथ मिले, सत्संगों का संचालन किया और किस प्रकार अपने गुरुदेव का संदेश पहुँचाने के लिए अपनी आध्यात्मिक संपदा को बाँटते रहे और सभी पर अपनी कृपा बरसाते रहे।

२७ अगस्त के दिन गुरुदेव ने गुड़गाँव आश्रम के लिए प्रस्थान किया और अगली सुबह अभ्यासियों के बड़े जमाव को सत्संग कराया। फिर उन्होंने अभ्यासियों से बातचीत करने में समय बिताया तथा आधे दर्जन से अधिक शिशुओं का नामकरण भी किया। उसी दिन बाद में वे शहर वापस लौटे।

२९ अगस्त को गुरुदेव नई दिल्ली के नए आश्रम के दूसरे चरण का पंजिकरण कराने के लिए गए। अपने गुरुदेव का काम करते हुए उन्हें होने वाला आनंद और उत्साह साफ नज़र आ रहा था। घर लौटने के बाद एक भाई ने इसका जिक्र करते हुए कहा कि इस चरण का पंजिकरण पूरा होने के बाद वे खुशी महसूस कर रहे होंगे। इस पर गुरुदेव ने हँसकर उत्तर दिया, ''यह भविष्य के लिए है परन्तु वर्तमान में मुझे और बहुत कुछ करना है'' और उन्होंने तुरंत सभी उपस्थित लोगों को सत्संग कराया।

चेन्नई: ३० अगस्त से ३० सितम्बर

३० अगस्त को गुरुदेव दिल्ली से चेन्नई आए। ३१ को सुबह कॉटेज में एकत्रित अभ्यासियों को गुरुदेव ने सत्संग कराया। सिटिंग के तुरंत बाद एक अभ्यासी दंपत्ति ने सिटिंग के लिए निवेदन किया क्योंकि वह रमज़ान का दिन था। गुरुदेव ने कहा कि उन्होंने अभी एक सिटिंग दी है और वे थकान महसूस कर रहे हैं। फिर कुछ रुककर वे बोले कि वे उन्हें पाँच मिनट बाद सिटिंग देंगे। इससे यह प्रदर्शित होता है कि किस प्रकार गुरुदेव अपनी व्यक्तिगत असुविधा की परवाह किये बगैर लोगों की विनंती स्वीकार करते हैं।

सितम्बर के पूरे महीने में गुरुदेव चेन्नई में रहे और वह भी अधिकतर मणपाक्कम आश्रम में। उन्होंने सैर का एक नित्य नियम बना लिया था। सायंकाल अपने शयन कक्ष से निकलकर वे कॉटेज के पीछे से होते हुए कॉटेज के सामने आकर बैठ जाया करते थे। १६ सितम्बर को गुरुदेव ने ७ बजे सुबह नए पुस्तकालय का, जो अब उपयोग के लिए तैयार है, उद्घाटन किया और प्रसाद को दिव्य करके उसे पुस्तकालय के स्वयं सेवकों में बाँटा। २५ सितंबर को 'गार्डन ऑफ हार्ट्स' के अभ्यासियों ने गुरुदेव को तलघर में शाम के भोजन के लिए आमंत्रित किया। गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित अभ्यासियों, मुख्यतः अभिभावकों को 'बच्चों का पालन–पोषण कैसे करें' इस विषय पर एक भाषण दिया। यह वार्ता मिशन की वेबसाईट पर शीघ्र ही उपलब्ध होगी।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

कोलकाता: ३० सितम्बर से ८ अक्तूबर २०११

३० सितम्बर को गुरुदेव दोपहर ३:४० बजे कोलकाता आ पहुँचे। सभी अभ्यासियों ने, जो गत डेढ़ वर्षों से उनके कोलकाता आने की अभिलाषा कर रहे थे, उनका उत्साह और प्रेमपूर्वक स्वागत किया। ३ अक्तूबर तक लगभग १५०० अभ्यासी आश्रम में एकत्रित हो गये थे। गुरुदेव ने १ और २ अक्तूबर को सुबह के सत्संग कराए।

उनकी भेंट के दौरान, भारत के पूर्वी क्षेत्र के लिए 'जी एस टी समिति का परिचय' नामक एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें सभी केन्द्र–प्रभारी, जोन–प्रभारी और कुछ प्रशिक्षक सम्मिलित थे और यह गोष्ठी १ और २ अक्तूबर को आयोजित की गई। प्रतिभागियों को उनके कार्य–प्रमुखों द्वारा जी एस टी के विभिन्न कार्य–कलापों की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

२ अक्तूबर की शाम को बच्चों ने एक कव्वाली और बहनों ने एक गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। गुरुदेव ने कार्यक्रम का आनंद उठाया और एक सामूहिक फोटो के लिए भी मान गए। उन्होंने रसोईघर के समूह के द्वारा दिए गए सभी अभ्यासियों के साथ भोजन–कक्ष में शाम के भोजन का निमन्त्रण भी स्वीकार किया। सभी एकत्रित अभ्यासियों के लिए यह एक आनंदप्रद और अविस्मरणीय शाम थी।

३ की सुबह को गुरुदेव ने कार्यकारिणी समिति की सभा की कार्यवाही का खुद संचालन किया। सभा के बाद उन्होंने भाई कमलेश पटेल की अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकारी और अपने जीवनकाल के पश्चात् मिशन के अध्यक्ष के रूप में नामांकन की घोषणा की। उन्होंने तुरंत विश्वव्यापी सभी केन्द्रों और अभ्यासियों को प्रसारित करने के लिए एक वीडियो सन्देश रेकॉर्ड कराया। शाम को ५ बजे गुरुदेव ने सत्संग कराया और नामांकन की घोषणा की तथा उपस्थित अभ्यासियों को भाई कमलेश पटेल से परिचित कराया।

५ की सुबह भाई कमलेश पटेल ने सत्संग कराया और साधना के महत्त्व पर एक वार्ता दी, गुरुदेव भाई अजय भट्टर के घर गए जहाँ वे ८ अक्तूबर तक रहे और फिर गुवाहाटी के लिए रवाना हुए।

गुवाहाटी: ८ –१० अक्तूबर २०११

यह उत्तर–पूर्वी भारत के लिए एक लंबे समय से प्रतीक्षित दिन था जब गुरुदेव १८ वर्ष के अन्तराल के बाद गुवाहाटी आए। ९ को गुरुदेव ने हरियाली से घिरे हुए ज़ोनल आश्रम के भूमि–स्थल में, जो शहर से २५ कि.मी. दूरी पर स्थित है और जहाँ से पहाडों का दृष्य दिखता है, अपना दिन बिताया। गुरुदेव का पारम्परिक बिहू नृत्य के साथ स्वागत किया गया।

सत्संग के पश्चात् उत्तर–पूर्वी भारत के सात प्रदेशों के हरेक प्रदेश ने पारंपरिक रूप से गुरुदेव का स्वागत किया। अपने भाषण में उन्होंने संगीत के सात स्वरों के साथ तुलना करते हुए 'सात' की सुंदरता को उभारा। उन्होंने कहा कि केवल एक स्वर से संगीत नहीं बनता। सात स्वरों में हरेक स्वर का अपना महत्त्व है। यद्यपि यह सच है कि हम लोग अलग–अलग प्रदेशों, संस्कृतियों और भाषाओं से आते हैं, हमारा लक्ष्य एक ही है और इसलिए हममें एकता की भावना होना आवश्यक है।

सत्संग के पश्चात् गुरुदेव ने पंजीकरण की औपचारिकताओं को पूरा किया। शाम के सत्संग के बाद उन्होंने ज़ोनल आश्रम का नाम 'ज्योति' रखा और निर्देश दिया कि वहाँ हर रविवार को सत्संग का संचालन किया जाए।

१० को गुरुदेव ने गुवाहाटी शहर में आश्रम के ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। उन्होंने सत्संग कराया और एकत्रित समूह को संबोधित करते हुए कहा, "साधना जीवन –पद्धति है यह जीवन में साँस (प्राण) के समान है। जैसे हमें भौतिक शरीर को जीवित रखने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, आध्यात्मिक शरीर के लिए प्राणाहुति ही भोजन है। यदि आध्यात्मिक शरीर का ध्यान न रखा जाए तो आत्मा मर जाती है।"

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

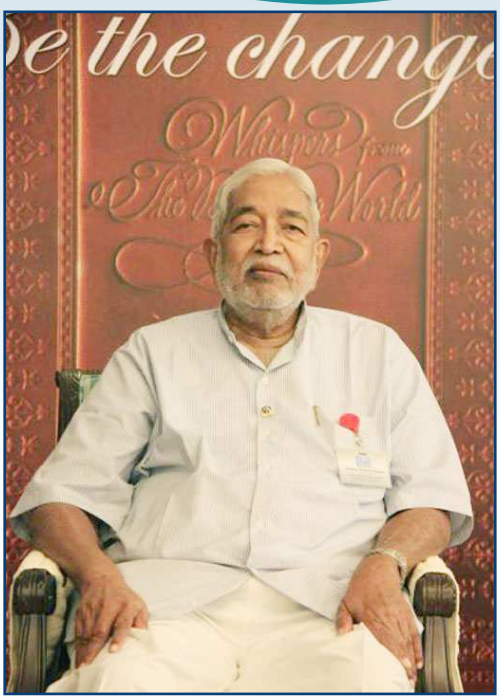

दिल्ली: १० से १३ अक्टूबर २०११

१० अक्टूबर को गुरुदेव गुवाहाटी से विमान द्वारा शाम करीब ७:३० बजे दिल्ली पहुँचे जहाँ करीब १०० अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। गुरूदेव प्रफुल्लित और आनन्दित थे तथा उन्होनें वहाँ उपस्थित सभी का अभिवादन किया। एक अभ्यासी भाई के घर रात्रि के भोजन के पश्चात् उन्होंने अपने विवेक और हाज़िरजवाबी से सबको मोहित कर दिया।

अगले दिन गुरुदेव शाम ४:०० बजे गुड़गाँव आश्रम पहुँचे। आने के पश्चात् वे बगीचे में बैठे और आधे घंटे से अधिक उन्होंने उपस्थित अभ्यासियों से बातचीत की। बगीचे में लगी एक मूर्ति के विषय में पूछे जाने पर गुरुदेव ने कहा कि वह मूर्ति 'द्रोणाचार्य' की है और वहाँ इसलिए लगाई गई है क्योंकि 'गुड़गाँव' का नाम 'गुरु ग्राम' पर आधारित है। (कहा जाता है की 'गुरु ग्राम' द्रोणाचार्य का गाँव था)। बातचीत के दौरान गुरुदेव ने बड़े प्रेम से अपने नामान्कित उत्तराधिकारी भाई कमलेश पटेल को सभी से परिचित कराया और फिर उन्होनें सत्संग कराया।

१२ अक्टूबर को सुबह ७:०० बजे गुरुदेव सत्संग संचालित करने के लिए ध्यान-कक्ष में आए। सत्संग शुरू कराने से पहले उन्होंने प्रतीक्षा की क्योंकि अभ्यासी अभी-भी आ रहे थे और उन्होनें एक छोटी सी वार्ता देने का निर्णय लिया। उन्होंने साधना की सही पद्धति और प्रवृत्ति के महत्व पर जोर दिया और अपनी वार्ता को समाप्त करते हुए भाई कमलेश पटेल को सभी से परिचित कराया। सत्संग के पश्चात गुरुदेव ने दो विवाह सम्पन्न कराये। १३ अक्टूबर को गुरुदेव सवेरे जल्दी तैयार हो गए। उन्होनें वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को सुबह ६:३० बजे सत्संग कराया और नाश्ते के पश्चात् करीब ८:०० बजे हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए।

दुबई

दोपहर १:१५ बजे गुरुदेव दुबई पहुँचे और २:३० बजे भाई संजय मेहरीष के घर पहुँचे। वे अच्छे मूड में थे और दिल्ली के अनेक अभ्यासी उनके साथ थे। पूरे विश्वभर से अनेक अभ्यासी आए थे और १४ अक्टूबर तक लगभग २५ देशों से जैसे यू.ए.ई, कुवेत, ईरान, बहरीन, ओमन, पाकिस्तान, इंडिया, अफ्रीका, यूरोप और यू.एस.ए से १०५० अभ्यासी आए थे।

गुरुदेव ने १४ अक्टूबर को सुबह 'बदलाव के लिए प्रार्थना करो-स्वयं बदलाव बनो' नामक सेमीनार का उद्घाटन किया। उसके बाद उन्होंने सत्संग कराया और भाई कमलेश पटेल का परिचय कराया। १५ अक्टूबर को सुबह सत्संग के पश्चात गुरुदेव ने प्रशिक्षक मीटिंग के दौरान विश्व सेवा दल (जी एस टी) का परिचय दिया। उन्होंने समझाया कि मिशन जो बाबूजी के समय छोटे और सरल सगंठन के रूप में था वह अब बढ़ गया है।

...."तो मैं एक बार फिर आप लोगों से कहूँगा कि आप लोगों के प्रति मेरा कर्तव्य सिर्फ़ एक दीप प्रज्ज्वलित करने जितना है। उसे जलाए रखना, उसमें तेल डालना या कुछ भी, बत्ती को सवाँरना, यह आपका काम है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप सब १०० प्रतिशत सहयोग करेंगे, सिर्फ़ आज ही नहीं, किन्तु भविष्य में भी, और हमारा सेवा समूह-इसीलिए उन्हें विश्व सेवा दल कहा जाता है, वे आप लोगों को आदेश देने के लिए नहीं, आप लोगों को सिखाने के लिए नहीं, बल्कि आप लोगों की समस्याओं को समझने के लिए है। कैसे सुलझाएँ, क्या करें, मेरा भारत में क्या अनुभव है, आपका ईरान में क्या अनुभव है, आपका तिम्बकतू में क्या अनुभव, आप समझे। यह पूर्ण रूप से एक आदान प्रदान करने की सुविधा है, हमारे काम का आदान प्रदान, काम से उत्पन्न हमारे अनुभवों का और भविष्य में हर क्षेत्र में सुधार लाने के लिए हम क्या कर सकते हैं"।

गुरुदेव ईरान और यू.ए.ई से आए अभ्यासियों से मिले। उनसे वार्तालाप के दौरान उन्होनें कहा, "चाहने और प्रेम करने में बहुत अन्तर है। मुझे एक गुरु चाहिए, किसलिए ? अब मैं गुरुदेव से प्रेम करता हूँ, इसलिए मैं आज्ञापालन करता हूँ। इसीलिए आप देखिए सहज मार्ग में आज्ञापालन "दस नियमों" आदि से नहीं है; हम प्रेम करते हैं, इसलिए आज्ञापालन करते हैं। आज्ञापालन हृदय से आता है, दिमाग या भय से नहीं, बल्कि प्रेम से आता है।

गुरुदेव २२ अक्टूबर को मुम्बई के लिए रवाना हुए और वहाँ से २५ अक्टूबर को अहमदाबाद चले गये।

पूर्णदिवसीय कार्यक्रम

विरुद्धनगर, तमिलनाडु

क्षेत्रीय संयोजक भाई एन. प्रकाश और जोन-प्रभारी भाई टी.वी. विश्वनाथ राव २१ अगस्त को विरुद्धनगर में स्थित चिन्नवल्लिकुलम आश्रम में आये। विरुद्धनगर, चिन्नवल्लिकुलम, अरुप्पुकोटई, करियापट्टि, कोविलपट्टि, श्रीविल्लिपुत्तूर, राजपालयम और शिवकासी केन्द्रों से आये लगभग ५० अभ्यासी भाई-बहनों ने पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रातः सत्संग के पश्चात, भाई एन.प्रकाश ने एक प्रोत्साहित करने वाली वार्ता प्रस्तुत की। नाश्ते के पश्चात 'अभ्यासियों की बेहतर गुणवत्ता' नामक विषय पर हुए सामूहिक वार्तालाप के दौरान कई जानकारियां सामने आईं। अभ्यासियों ने बताया की उन्हें कई अवसरों पर गुरुदेव की उपस्थिति और उनके मार्गदर्शन का अहसास हुआ है। शाम के सत्संग के साथ पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का समापन हुआ।

गुवहाटी

युवकों के प्रयासों के कारण गुवहाटी केन्द्र पर ३ सितम्बर का दिन गतिविधिओं से परिपूर्ण था। प्रातः सत्संग के पश्चात् एक स्लाइड शो का आयोजन किया गया जिसमें एकोज इंडिया के सितम्बर अंक के मुख्य विषयों को दिखाया गया। नाश्ते के पश्चात् एक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें नये अभ्यासियों के उनकी साधना के दौरान उत्पन्न संदेहों को दूर करने का प्रयास किया गया। इस सत्र के दौरान यह पाया गया कि पुराने अभ्यासियों को भी उनकी दैनिक साधना के विषय में कुछ मार्गदर्शन की आवश्यकता है। यह एक विचार उत्प्रेरक सत्र था जिसका आयोजन एस.एम.एस.एफ़. द्वारा तैयार की गयी स्लाइड्स की सहायता से किया गया था और इस सत्र के द्वारा प्राप्त लाभ का अनुमान लगाया जा सकता था। वातावरण को हल्का और सजीव बनाने के उद्देश्य से एक छोटे से अन्तराल के पश्चात् आयोजित एक प्रश्न-उत्तर सत्र ने सभी अभ्यासियों को बांध कर रखा। सत्र के पश्चात् हल्का नाश्ता और ४ बजे शाम का सत्संग आयोजित किया गया।

त्रिशूर

४ सितम्बर को ओणम के त्यौहार के अवसर पर योगाश्रम, त्रिशूर में

एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में गुरुदेव की वार्ताएं, 'हृदय की अनन्त लौ' और 'मानवता के लिए भविष्य को बदलो' दिखायी गयी। केन्द्र संचालक भाई टी.पी. नारायण और भाई जयप्रकाश ने वार्ताओं का मलयालम भाषा में अनुवाद करके उपस्थित अभ्यासियों को समझाया। इस दौरान अभ्यासियों को हाल ही में गठित की गयी अन्तराष्ट्रीय सेवा समिति, मिशन की गतिविधियां, सतखोल आश्रम जाने का महत्व, क्रेस्ट और रिट्रीट सेन्टर के विषय में जानकारी उपलब्ध करायी गयी। आधे घन्टे के लिए सुनहरे मौन का भी पालन किया गया।

देवकोटई, तमिलनाडु

तमिलनाडु के विभिन्न केन्द्रों जैसे कि रामनाथपुरम, परमकुडी, मनमदोरई और सिवगंगई से आए लगभग ८१ अभ्यासियों ने देवकोटई केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का आरम्भ प्रातः १० बजे एक जन-सभा से हुआ जिसमें भाई एस.मारिया सेल्वराज ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए उन्हें सम्बोधित किया। कार्यक्रम में लगभग ५० स्थानीय लोगों ने भाग लिया जिन्हें मिशन की गतिविधियों से अवगत कराया गया। इस दौरान कार्यक्रम में भाग ले रहे केन्द्रों के प्रशिक्षकों ने 'मानव जन्म का उद्देश्य', 'धर्म', 'गुरुदेव की भूमिका', 'साधना का महत्व', 'अभ्यासी की भूमिका' और 'सहजमार्ग ध्यान की आवश्यकता' जैसे विषयों पर संक्षिप्त जानकारी दी। दोपहर के सत्र में अभ्यासियों ने आपस में अपने अनुभव बताये। कार्यक्रम का समापन शाम के सतसंग के साथ हुआ।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

सेवा द्वारा उन्नति, मुम्बई

मुम्बई में विभिन्न स्थानों पर सितम्बर और अक्टूबर के महिने में चार सप्ताहन्तों को सुबह १० बजे से शाम ४:३० बजे तक 'सेवा द्वारा उन्नति' नामक विषय पर कार्यशालायें आयोजित की गयीं। प्रत्येक कार्यक्रम में औसतन २० अभ्यासियों ने भाग लिया जिसका उद्देश्य अभ्यासियों को प्रोत्साहित करना, मिशन में विभिन्न स्वैच्छिक कार्यों की जानकारी देना, सेवा के लिए उचित मनोवृति का विकास करना और कार्य करने के लिए दिशा निर्देशों की जानकारी देना था।

जलगाँव में ११ सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में जलगाँव और आस-पास के केन्द्रों से आए ३० अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रदर्शित स्लाइड्स अंग्रेजी भाषा में दिखायी गयीं जिसका अभ्यासियों ने हिन्दी और मराठी में साथ-साथ ही अनुवाद किया। अभ्यासियों ने कार्यक्रम में पूरे उत्साह से भाग लिया और कार्यक्रम का समापन सत्संग के साथ हुआ।

अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस, गुजरात

२१ सितम्बर को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर गुजरात में २९ स्थानों पर प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया गया जिनमें ५२५ अभ्यासियों और १६०० अतिथियों ने भाग लिया।

जामनगर में ४ स्थानों पर सभाएं आयोजित की गयीं जिनमें अभ्यासियों और अतिथियों सहित ४०० व्यक्ति सम्मिलित हुए। लगभग २०० अतिथि और अभ्यासी भावनगर की सभा में और ५० पोरबन्दर में हुई सभा में सम्मिलित हुए। कादी में यह सभा एक स्कूल में आयोजित की गयी जिसमें २२५ अतिथि और अभ्यासियों ने भाग लिया। लगभग ६० व्यक्ति भुज केन्द्र में और इसी प्रकार राजकोट केन्द्र में हुई सभा में भी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम से १५ दिन पहले निमन्त्रण पत्र, बैनर्स और प्रस्तुती का सामान इत्यादि तैयार कर लिये गये थे। निमन्त्रण पत्र अभ्यासियों के परिवारजनों और मित्रों में बांटे गये। सभा में उपस्थित सभी व्यक्तियों की सहायता के लिए विश्व-प्रार्थना एक बैनर पर गुजराती भाषा में दर्शायी गयी थी जिससे उसे याद करने में आसानी हुई।

संकल्प शक्ति का सदुपयोग, मुंबई

४ सितम्बर को मुम्बई केन्द्र में 'संकल्प शक्ति' नामक विषय पर एक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें ५५ अभ्यासी सम्मिलित हुए। सत्र का आरम्भ स्वागत सम्बोधन, गुरुदेव के लिए एक गीत और एक परिचय के साथ हुआ। कार्यक्रम में शीर्षक 'संकल्प शक्ति' से सम्बन्धित गुरुदेव की ऑडियो वार्ताएं और वीडियो हिन्दी और अंग्रेजी में चलायी गयी। सम्मिलित अभ्यासियों को सहजमार्ग पर आधारित और शीर्षक से सम्बन्धित सामग्री पढने के लिए दी गयी। कार्यक्रम का समापन अभ्यासियों द्वारा अपनी साधना को और अधिक लगन और विश्वास के साथ आगे जारी रखने के निश्चय के साथ हुआ।

दस नियमों पर कार्यक्रम, गदग, उ. कर्नाटक

कर्नाटक में हुबली के पास गदग में दस नियमों पर आधारित एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ५३ अभ्यासी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का आरम्भ प्रातः सतसंग के साथ हुआ। कार्यक्रम में दस नियमों पर आधारित संतुलित जीवन जीते हुए चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया गया। प्रत्येक नियम को गुरुदेव के जीवन से उदाहरण लेकर समझाया गया। दोपहर के भोजन के पश्चात् बच्चों ने एक गाना गाया। कुछ शिल्पकार्य प्रदर्शित किये गये। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

राजस्थान _ युवाओं के लिए जागरुकता कार्यक्रम

४ सितम्बर को राजस्थान जोन के युवा अभ्यासियों के लिये जयपुर में एक जागरुकता कार्यशाला आयोजित की गयी। मनोनीत संयोजकों ने निम्न विषयों पर प्रस्तुति दी:

- सहज मार्ग की सही समझ क्या है और इसे युवाओं के लिये कैसे विकसित किया जाये?
- एक युवा संयोजक के रुप में आप अपने केन्द्र में युवाओं के लिये किन गतिविधियों का संचालन कर रहे है?
- सहज मार्ग वेबसाईट से सहायता।
- क्रेस्ट खड़गपुर और बैंगलोर में युवा गोष्ठी पर जानकारी।

इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न केन्द्रों के युवाओं को सहज रुप से एक साथ लाना और उन्हें आपसी वार्तालाप का अवसर देना, अपने विचारों को व्यक्त करना और भाईचारे की भावना को बढ़ाना था। इसमें अपनाये गये तरीके के अन्तर्गत उन्होंने केन्द्रों में विभिन्न गतिविधियों में अपने अनुभव बताये, एक प्रश्नोत्तर सत्र और उससे सम्बन्धित वीडियो दिखाया गया। शाम के समय एक गतिविधि 'जीवन–आयाम' शीर्षक पर आयोजित की गयी, जिसके माध्यम से उन्होंने सीखा कि जीवन के चार आयामों– परिवार, व्यवसाय, मिशन और व्यक्तिगत रुप में अपने जीवन को कैसे संचालित किया जाये। गोष्ठी का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

भीलवाड़ा में ९ अक्तूबर को युवाओं के लिये दो घंटे की एक बैठक आयोजित की गयी जिसका विषय था: 'सहज मार्ग की सही समझ क्या है और इसे युवाओं के लिये कैसे विकसित किया जाये'। इसमें १० अभ्यासिओं ने भाग लिया और अपने–अपने विचार व्यक्त किये।

अजमेर में २० से २२ अगस्त को युवा संयोजक डॉ सन्नी ने 'आत्म रुपान्तरण' विषय पर तीन दिन की एक कार्यशाला: आयोजित की। प्रशिक्षक डॉ विकास ने इसे घरेलू वातावण में सरल और सुसाध्य बनाया। प्रत्येक दिन का आरम्भ और समापन सत्संग के साथ हुआ। शुरुआती वार्ता के बाद अंतरावलोकन पर एक सत्र 'दूसरों में क्या कमी है और मुझमें क्या कमी है?' ने प्रतिभागियों को अहसास कराया कि समस्या कभी भी बाहर नहीं है बल्कि हमेशा अपने अन्दर ही है। इसने व्यक्ति की उन विशेषताओं को भी उजागर किया जिनके बारे में उन्होंने पहले कभी नहीं सोचा था। उनके हृदय खुल गये और समाधान उनके भीतर से ही आने लगे। डायरी लेखन पर एक सत्र और 'लक्ष्य तक कैसे पहुँचा जाये' और 'आध्यात्मिक जीवन का चुनाव' विषयों पर वार्तालाप के द्वारा साधना के महत्व को समझाया गया। इस कार्यशाला से उन्हें अपने भाई बहनों और इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण अपने आप को बेहतर जानने में सहायता मिली।

शिक्षक विकास कार्यक्रम

तिपटुर, कर्नाटक

तिपतुर में कर्नाटक दक्षिण ज़ोन के ३७ अभ्यासियों के लिये २४ से २५ सितम्बर को दो दिन की एक आवासीय कार्यशाला 'स्पन्दन: शिक्षक विकास कार्यक्रम' कन्नड़ भाषा में आयोजित की गयी। कार्यशाला का उद्देश्य अभ्यासियों को मिशन के संवेदनशील प्रतिनिधियों के रुप में विकसित करना था जिससे कि वे सहज मार्ग के तत्वों और अभ्यास की जानकारी प्रभावी ढंग से प्रेषित कर सकें। अनुभवी प्रशिक्षकों ने कुछ विषयों जैसे – 'प्रभावी संप्रेषण योग्यता का विकास', 'आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को सहज मार्ग का परिचय देते समय उचित मात्रा में जानकारी देना', विभिन्न संदर्भों में सहज मार्ग का परिचय' और ' शिक्षक बनने के लिए लगातार आत्मविकास की आवश्यकता' – पर सत्र आयोजित किये। प्रशिक्षकों से राय लेते हुये प्रतिभागियों को समूहों में अभ्यास सत्र कराये गये। कुछ प्रतिभागियों ने पहले से दिये गये विषयों का प्रस्तुतिकरण किया और सहायकों से अपनी क्षमताओं और सुधार के क्षेत्रों का आंकलन किया। प्रतिभागियों को मिशन में विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षकों के लिये अवसर बताते हुये उन्हें अपने केन्द्र के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करके अपने केन्द्र में गतिविधियों की योजना बनाने का सुझाव दिया गया।

प्रतिभागियों के लिये यह कार्यशाला बहुत ही उपयोगी रही, इससे उनमें सहज मार्ग को फैलाने का आत्मविश्वास बढ़ गया। वे सभी मालिक के कार्य में भाग लेने के लिये नये उत्साह और उमंग से भरे हुये अपने केन्द्रों पर वापस गये।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

बच्चों के लिये कार्यशाला, चेन्नई

८ से १२ वर्ष की आयु के बच्चों के लिये ९ अक्टूबर को एक शिल्प कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें लगभग ९० बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने बेकार सामान से दीवाली कार्ड, फोटो फ्रेम, दीवार पर लगाने वाली वस्तुएं, जन्मदिन की टोपियां, रंगबिरंगे चश्में आदि बनाये। उन्होंने टीशर्ट पर प्रेरित करने वाले कथन और सुन्दर चित्रों की चित्रकारी की। उन्होंने स्वंय की कल्पना से थैलों पर सृजनात्मक चित्र बनाये जिसमें उन्होंने प्रकृति को बचाने के लिये पोलीथीन का उपयोग ना करने का संदेश दिया। बच्चें हँसी–मजाक में जीवन मूल्यों को सीखते हुये बहुत प्रसन्न थे।

नया केन्द्र, तमिलनाडू

२८ अगस्त को तिरुपूर के पास 'करुमाथमपट्टी' में एक नये केन्द्र का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सुबह के सत्संग के साथ हुआ। भाई टी. वी. विश्वनाथ राव ने अपने उद्घाटन भाषण में तिरुपूर आश्रम के विकास में अभ्यासियों के प्रयत्नों को याद करते हुये उनसे इस केन्द्र के विकास के लिये और नये केन्द्रों को आरम्भ करने के लिये समर्पित भाव से काम करने का अनुरोध किया। एक ओपन हाऊस सत्र आयोजित किया गया जिसमें सहज मार्ग के प्रमुख तत्वों की व्याख्या की गयी। परिणाम स्वरुप अनेक प्रतिभागियों ने अभ्यास शुरु करने की इच्छा व्यक्त की।

नया ध्यान कक्ष, नैनीताल, उत्तराखंड

नैनीताल में एक चिरप्रतीक्षित आवश्यकता नवनिर्मित ध्यान कक्ष के उद्घाटन के साथ परिपूर्ण हुयी। लगभग १५० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता वाला यह कक्ष एक अभ्यासी भाई के घर की ऊपरी मंजिल पर बनाया गया है। इस अवसर पर एक पूर्णदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें, गीत, कविता पाठ, बच्चों के द्वारा गाये गये भजन और एक भावपूर्ण भाषण सम्मिलित था। ध्यान कक्ष के अर्पण समारोह से सभी स्थानीय अभ्यासी अति उत्साहित थे।

चरित्र निर्माण, तिरुपूर

तिरुपूर के चेट्टीपलयम योगाश्रम में भाई रवि सुब्बियन ने कुछ युवा अभ्यासियों के विशेष अनुरोध पर १४ से १५ अगस्त को ' चरित्र–निर्माण' विषय पर एक कार्यक्रम का संचालन किया।

१४ तारीख रविवार को सुबह के सत्संग के बाद कार्यक्रम का आरम्भ एक 'आत्म–विश्लेषण' परीक्षा के साथ हुआ। प्रशिक्षण लेने वालों को अन्तरावलोकन में सहायता हेतु इस विषय पर १३ प्रश्न दिये गये और उनसे चरित्र निर्माण के लिये अब तक किये गये प्रयत्नों को लिखने के लिये कहा गया।

इस विषय पर मालिक के कथनों और 'व्हिसपर्स फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड' में से कुछ संदेशों को उन्हें सुनवाया गया। इससे उन्हें स्पष्ट ज्ञान मिला कि अच्छा चरित्र केवल ईमानदार और सत्यवादी होना ही नहीं है, बल्कि यह तो सिद्धान्तों का मूलभूत संकलन है जिसे प्रत्येक स्थिति में अपनाकर ही एक पूर्णतया सन्तुलित व्यक्तित्व बनता है।

उनको यह भी समझाया गया कि हमारा बाहरी व्यक्तित्व, हमें मालिक द्वारा दी गयी आन्तरिक अध्यात्मिक स्थिति के अनुरुप ही होना चाहिए। १५ तारीख को चरित्र निर्माण में सहायक उपकरणों और व्यक्ति में संकल्प शक्ति की असफलता के कारणों पर बातचीत हुयी। अगला सत्र आत्म विश्लेषण पर था और प्रत्येक व्यक्ति ने अपने नकारात्मक पक्ष और कमियों के विश्लेषण का आनन्द लिया। इससे उन्हें अंदाज़ा हुआ कि मालिक की अपेक्षाओं के अनुसार अपने अन्दर किस तरह परिवर्तन लाना चाहिए।

प्रतिभागी प्रसन्नता और आत्मविश्वास से भरे थे और इस कार्यक्रम में अर्जित ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिये उत्सुक थे।

भाग ४, अंक ६ नवम्बर २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

प्रकाश का केन्द्र

मैसूर आश्रम, दक्षिण कर्नाटक

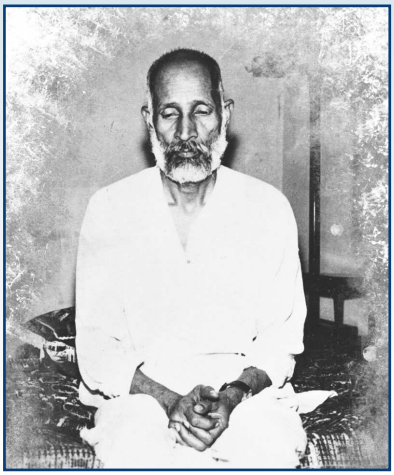

मैसूर आश्रम आस पास के आश्रमों जैसे नन्जन्गुड, मान्दया, हन्सूर, मादिकेरि, टी.नारसिपुरा और पेरीयापटना केन्द्रों के लिये रीजनल आश्रम है। मैसूर आश्रम इन आस पास के आश्रम के पहचान पत्र एवं पत्रिकाओं से संबन्धित कार्यक्रमों को सन्चालित करता है। इस आश्रम में रीजनल उत्सव, कार्यशाला एवं अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी होते हैं।

पूज्य मालिक के दौरे

मैसूर आश्रम की स्थापना १९५० के दशक में हुई। बाबूजी महाराज दिसम्बर १९६५ में मैसूर आये थे और श्री मन्जुनाथ अय्यर के घर पर रुके थे। मालिक १६ दिसम्बर १९८५ को मैसूर स्थापना दिवस मनाने आये थे जो गोविन्द राव मेमोरिअल हॉल में मनाया गया था। १७–१८ मई १९९५ को मालिक पुनः मैसूर आये थे और मुलकनाडू भवन में सत्संग कराया था। २००२ में १६ एकड़ जमीन मैदान्हल्लि रोड पर ली गयी जिसमें ८ एकर आश्रम के लिये एवं बाकी ८ एकड़ को अभ्यासियों के आवासीय सन्कुल के लिये रक्खा गया। अप्रिल २००२ को मालिक ने ज़मीन आश्रम को समर्पित कर दी। २००५ में पुनः ३ एकड़ ३२ गुन्टा जमीन और ली गयी।

इसके तुरन्त बाद ध्यानकक्ष, रसोईघर एवं ऑफिस का निर्माण किया गया। १६ फरवरी २००४ को पूज्य मालिक ने हजार अभ्यासियों की मौजूदगी में वृद्ध एवं युवा दोनों पीढियों के महत्व को ज़ोर देते हुए बताया और कहा कि हमें बुजुर्ग लोगों की जरुरत उनके अनुभवों और बुद्धिमत्ता की वजह से होती है जबकि युवकों की ज़रूरत हमें उनकी शक्ति, उनके आदर्श, और उनमें अपनी सोच के हिसाब से कार्य करने की क्षमता के लिए होती है। बुजुर्ग लोग सोचते हैं एवं बात करते हैं, युवकों को काम करना आवश्यक है।

पूज्य मालिक अक्टूबर २००४ में पुनः मैसूर आये थे। संयोग से उस समय वहाँ पर यूथ सेमिनार का आयोजन किया गया था। मालिक ने युवकों को सम्बोधित करते हुए उस समय कहा, "पूज्य बाबूजी महाराज जब हम लोगों को पहली बार पूजा देते हैं, तब वे उसे बीजारोपण कहते हैं। वे स्वयं के बीज को हमारे हृदय में स्थापित करते हैं और इसीलिये आध्यात्म में इसे हृदय–योनि कहते हैं। यह एक नये जीवन का आरम्भ होता है जिसमें आप का अपने में ही एक पुनर्जन्म होता है यदि आप बाबूजी महाराज द्वारा आप के हृदय में बोई गयी दिव्यता को भक्ति, श्रद्धा और ध्यान से सींचे और उसको अन्कुरित होने का अवसर दें।"

ध्यानकक्ष के पीछे पूज्य मालिक के कॉटेज का निर्माण किया गया। मालिक दिसम्बर २००६ में पुनः आश्रम आये थे और कुछ समय के लिये रुके थे।

आश्रम का वर्तमान स्वरूप

इस समय मैसूर मे करीब ५०० अभ्यासी हैं तथा करीब १५० अभ्यासी नियमित रूप से रविवार के सत्संग मे शामिल होते हैं। आजकल एक बडे ध्यानकक्ष, जिसमें करीब १००० अभ्यासी बैठ सके, के निर्माण की तैयारी चल रही है। आम, अमरूद और पपीते के करीब ५०० पेड़ आश्रम में लगाये गये हैं। अभ्यासी यहां पर एक सब्ज़ी के बगीचे तथा एक निसर्गरम्य उद्यान की भी देख–रेख कर रहें हैं।